International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 8, Augustl - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राख के ढके मन में नारी विमर्ष

मनिंदर

Email. anindersheokand83@gmail.com

श्री यादवेन्द्र षर्मा 'चन्द्र' हिन्दी राजस्थानी साहित्य के सुप्रसिद्व सहित्यकार है। इनका जन्म १५ अगस्त सन् १९३२ में राजस्थान के बीकानेर षहर में हुआ । इनके पिता जी का नाम श्री चुन्नीलाल बिस्सा था। जो कलकता में कपड़े का व्यापार करके अपना जीवन यापन करते थे। इनकी माता जी का नाम श्रीमती आषा देवी था, जो धार्मिक विचारों की महिला होने के साथ साथ सूझ-बूझ सम्पन्न कुषल गृहणी थी। इनका बचपन का नाम 'गुनिया' व स्कूल का नाम चॉद रतन बिस्सा है। 'चन्द्र' जी अपने परिवार में दसवीं तक षिक्षा प्राप्त करने वाले एकमात्र मेधावी छात्र थे। इनकी पत्नी का नाम श्रीमती षान्ति भट्टाचार्य है। इनके दो पुत्र है, जो दिल्ली में रहते है। बड़े पुत्र विजय कुमार 'चन्द्र' ने बाल सहित्य एवं छोटे पुत्र कृश्ण कुमार 'चन्द्र' ने राजनैतिक चेतना पर कार्य किया है।

''आर्थिक विशमताएं और सामाजिक व्यवहार मेरे लेखन कार्य के नितान्त विपरीत दिखाई पड़ रहे थे, परन्तु माता जी का जेवर बेचकर मुझे लेखन कार्य के प्रति वफादार करना और पत्नी षांति भट्टाचार्य का जीवन की कठिन राह में रूखा-सूखा खाकर सहयोग देते रहना दोनों बातें ही मुझ में जीवन भरती रही।''

श्री यादवेन्द्र षर्मा 'चन्द्र' ने राख से ढके मन' उपन्यास में नारी के विविध रूपों का वर्णन करते हुए नारी जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं समस्याओं को चित्रित किया है। कहीं वह परम्परावादी रूढ़ियों से बंधी है तो कही स्वछन्द प्रेम सम्बधों को अपनाने को आतुर है। माता के रूप में संवरी अपनी बेटी को पढा-लिखाकर उसमें सामाजिक संस्कारों तथा मर्यादाओं के प्रति जागरूक बनाती है तो दूसरी और मुक्ति की मां आधुनिक होने के कारण अपनी बेटी के नैतिक पतन के लिए जिम्मेदार है।

आज की नारी के मन में एक और वैवाहिक बन्धनों के प्रति विद्रोह पैदा हुआ है तो दूसरी और यह पति की दासी एवं केवल सुख सुविधा की सामग्री नही बनना चाहती । सोमा अमीर बाप की इकलोती सन्तान होने के कारण अपने पति का आदर नहीं करती है। वह षराब पीती है तथा नषे करती है। आधुनिकता की आड़ और अहम् के कारण अपने वैवाहिक जीवन को अहमियत नही देती। सैक्स और नारी का स्वच्छन्दवादी दृश्टीकोण को श्री 'चन्द्र' यथार्थ

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 8, Augustl - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रूप में चित्रित किया है। आधुनिकता की आड़ में आज युवा पीढ़ी नैतिक पतन की और अग्रसर है। वह सैक्स सम्बन्धों को खुल रूप में स्वीकार करती है। नषा षराब, पार्टियों में पराये मर्दो के साथ सारी रात डांस करना वह आधुनिकता का परिचायक मानती है।

सामाजिक मर्यादा तथा संस्कारों का वहन करने वाली नारी का चित्रण भी श्री 'चन्द्र' ने बखूबी किया है। संवरी विधवा होने के बावजूद अपने पतिधर्म साहित्य और समाज का घनिश्ठ सम्बन्ध है। सहित्यकार अपनी रचनाओं में तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण करता है। नर-नारी के समन्वितरूप से ही समाज का निर्माण हुआ है। अतः नारी को सहित्य से दूर नही रखा जा सकता। सहित्य की विभिन्न विधाओं में उपन्यास अभिव्यक्ति का एक सषक्त माध्यम है। इसलिए उपन्यासों का कथानक प्रायः नारी को केन्द्र बनाकर आगे बढ़ता है। आरम्भ से ही हिन्दी उपन्यासों में नारी का सर्वास चित्रण हुआ है।

यादवेन्द्र षर्मा 'चन्दग' हिन्दी साहित्य में एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है। लेखन के बीज इनमें आरम्भ से ही थे। सफल सहित्यिक साधना इनके सषक्त व्यक्तित्व का ही परिणाम है। इनका व्यक्तित्व अत्यन्त गहन है। इनके मानसिक विकास में जहां एक और पारिवारिक संस्कारों प्राचीन भारतीय सहित्य और समाजिक रूप में चित्रित किया गया है।

यादवेन्द्र षर्मा 'चन्द्र' ने अपने उपन्यास 'राख से ढके मन' में नारी के अनुभव जगत् और उसके अन्तर्मन के संसार को ही विषेश रूप से अध्ययन का विशय बनाया है। नारी मन की भावनाओं, अन्तः ग्रन्थियों एवं जटिलताओं को परत-दर-परत एवं यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। आज की नरी आधुनिकता तथा प्रचीनता के अन्तर्द्वनदों से घिरकर जिस मानसिक पीड़ा तथा संघर्श से गुजर रही है उसकी प्रामाणिक अभिव्यक्ति श्री 'चन्द्र' के सहित्य में स्पश्ट झलकती है।

जिसका पालन कठोरता से करती है। वह अपने पति की लाज को लूटने नही देती। कंजर जाति में पैदा होने के बावजुद वह सामाजिक मर्यादा को नही तोड़ती।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 8, Augustl - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आर्थिक विपन्नता को श्री 'चन्द्र' ने बखूबी चित्रित किया है। आज की नारी अपनी आर्थिक परिस्थितियों के कारण तथा कुद परम्रावादी की औरतें घर चलाने के लिए जिस्म-फरोषी करती है। मुक्ति आधुनिकता की आड़ में जाने-अनजाने में अपने बदन को बेच डालती है। अपने गर्व से मदांध होकर पुरूश ने नारी पर अत्याचार और उसका षोशण किया है। पुरूश की हवस की षिकार होकर वह अनेक पुरूशों द्वारा छली जाती है। इसमें केवल उसकी विवष्ता और बेबसी ही झलकती है। श्री 'चन्द्र' ने नारी के मातृत्व, पत्नीत्व, बेटी इत्यादि रूणे के साथ-साथ नारी का साहसिकता, आधुनिकता, सैक्स तथा नारी के स्वच्छन्दवादी पारम्परिक दृश्टिकोण तथा पुरूशों का नारी के प्रति परम्परिक दृश्टिकोण को यथार्थ रूप में चित्रित किया है।

सन्दर्भ-

१. हिन्दी साहित्य का इतिहास-यादवेन्द्र षर्मा 'चन्द्र'
२. हिन्दी साहित्य का इतिहास-गणपति चन्द्र गुप्त
३. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास-सूधा जैन